अध्याय

11

विद्रोही राज

1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

चित्र संख्या एक में डाली गई बातें

1 परिचय

1.1 1857 का संग्राम ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ी और अहम घटना थी। इस क्रांति की शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ से हुई थी जो धीरे-धीरे कानपुर, बरेली, झांसी दिल्ली अवध आदि स्थानों पर फैल गई क्रांति की शुरुआत तो एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई लेकिन समय के साथ उसका स्वरूप बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में हो गया जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहां गया

1857 की क्रांति के प्रमुख कारण

- राजनीतिक कारण
- सामाजिक एवं धार्मिक कारण
- आर्थिक कारण
- सैन्य कारण
- तात्कालिक कारण

1857 के विद्रोह का प्रमुख राजनीतिक कारण अंग्रेजों की विस्तार वादी नीति और डॉक्ट्रिन ऑफ़ लैप्स (हड़प की नीति) का सिद्धांत था।

भारी संख्या में भारतीय शासकों और प्रमुखों को हटा दिया गया जिससे अन्य शासक भयभीत हो उठे।

डलहौजी ने डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स के सिद्धांत के तहत सातारा, नागपुर, झांसी, जैतपुर, संबलपुर, उदयपुर आदि को हड़प लिया।

© JCERT not to be republished

कु प्रशासन के आरोप में अवध को हड़प लिया

भारत में तेजी से फैल रहे पश्चिमी सभ्यता के कारण आबादी का एक बड़ा वर्ग चिंतित था।

1850 ई० में एक अधिनियम के द्वारा हिंदू वंशानुक्रम कानून को बदल दिया गया।

ईसाई धर्म अपना लेने वाले भारतीयों को पदोन्नति कर दी जाती थी।

इससे लोगों को यह संदेह होने लगा कि अंग्रेज भारतीयों को इसाई धर्म में परिवर्तित करने की योजना बना रहे हैं।

सती प्रथा तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी प्रथाओं को समाप्त करने और विधवा पुनर्विवाह को बैध् बनाने वाले कानून को स्थापित सामाजिक संरचना के लिए वैध माना गया

यहां तक की रेलवे एवं टेलीग्राफ को भी लोगों ने संदेह की दृष्टि से देखना प्रारंभ किया

भारी भरकम प्रभु राजस्व एवं लगान की वसूली के तरीके से जमींदार लोग परेशान हो गए जैसे सूर्यास्त की नीति लागू कर दी गई

बड़ी संख्या में सिपाही खुद किसान वर्ग से आते थे और वह अपने परिवार को को छोड़कर आए थे इसलिए किसानों का गुस्सा जल्द ही सिपाहियों में भी फैल गया

भारतीय हस्तकला उद्योग को ब्रिटेन के सस्ते में से निर्मित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी।

1857 के विद्रोह एक सिपाही विद्रोह के रूप में शुरू हुआ। @ भारत में ब्रिटिश सैनिकों के बीच भारतीय सिपाहियों की संख्या 2.20 प्रतिशत थी लेकिन उन्हें ब्रिटिश सैनिकों से निम्न श्रेणी का माना जाता था यूरोपीय सिपाहियों से कम वेतन पातेथे।

विद्रोह का तत्कालीन कारण नई एनफील्ड राइफल के कारतूस ओं में गाय और सुअर की चर्बी माना जाता है इन कारकों को राइफल में लोड करने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था, जिससे हिंदुओं एवं मुसलमान दोनों सिपाहियों ने उनका इस्तेमाल करने से इंकार कर दिया।

मार्च 1857 को नए राइफल्स के प्रयोग के विरुद्ध मंगल पांडे ने आवाज उठाई अपने वरिष्ठ अधिकारियों पर हमला बोल कर उसकी हत्या कर दी।

8 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फांसी की सजा दे दी गई।

9 मई 1857 को मेरठ में पचासी भारतीय सैनिकों ने नई रायफल्स का प्रयोग करने से इंकार कर दिया इसके साथ ही यह विद्रोह धीरे-धीरे संपूर्ण देश में फैल गया

© JCERT not to be republished

1857 की क्रांति का स्वरूप

अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति के स्वरूप को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन यह तय है कि 1757 से लेकर अट्ठारह सौ सत्तावन ईस वीं तक के ब्रिटिश शोषणकारी नीति ने भारतीयों को विद्रोह के लिए बाध्य किया

एक सैनिक विद्रोह था।

सभ्यता और बर्बरता के मध्य संघर्ष।

सत्ता के पुनः स्थापना का षड्यंत्र।

धार्मिक संघर्ष।

प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष।

लॉरेंस ने इसे सैनिक विद्रोह माना, जिसका कारण चर्बी वाल कारतूस था।

आर.सी. मजूमदार ने इसे सैनिक विद्रोह माना, मजूमदार ने यह बताया कि बाद में यह जन आंदोलन का रूप ले लिया, कुछ सिद्धांत इसके सैन्य विद्रोह पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं, क्योंकि सभी सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया, साथ ही साथ सैनिक के अलावे जमींदार तालुकदार आम जनता एवं कृषक ने भी विद्रोह किया था।

अतः है इसे हम केवल सैनिक विद्रोह नहीं मान सकते

टी. आर. होम्स ने इसे सभ्यता और बर्बरता के मध्य संघर्ष माना। हुए अंग्रेजों को शब्द और भारतीयों को बर्बर मानते थे। लेकिन होम्स का यह मूल्यांकन एकपक्षीय प्रतीत होता है।

जेम्स आउट्रंम एवं डब्ल्यू टेलर ने इसे हिंदू मुस्लिम षड्यंत्र का परिणाम माना। चुकी विद्रोहियों ने बहादुर शाह जफर को अपना नेता मान लिया था, उनका विश्वास था कि हिंदुओं से सहयोग प्राप्त कर मुगल सत्ता को स्थापित करना चाहते हैं, लेकिन और आउट्रांम का यह विचार मान्य नहीं है।

रिज महोदय ने 1857 के विद्रोह को धर्मांध ईसाईयों के विरुद्ध संघर्ष कहा है 'हिंदू -मुस्लिम 'ईसाई धर्म प्रचार को अपने ऊपर प्रहार के रूप में देखते थे। अतः हिंदू मुस्लिम ने अपने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

लेकिन इसे पूरी तरह सत्य नहीं माना जा सकता है क्योंकि बहुत सारे हिंदू मुस्लिमों ने अंग्रेजों का साथ दिया था।

डिजरायली ने इस विद्रोह को राष्ट्रीय विद्रोह बताया, जिसमें सैनिक उपकरण मात्र थे।

निष्कर्षत:इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहने में कोई संकोच नहीं है, क्योंकि सैनिक, आम जनता कृषक ने एक साथ सड़क पर उतरकर संघर्ष किया।

© JCERT not to be republished

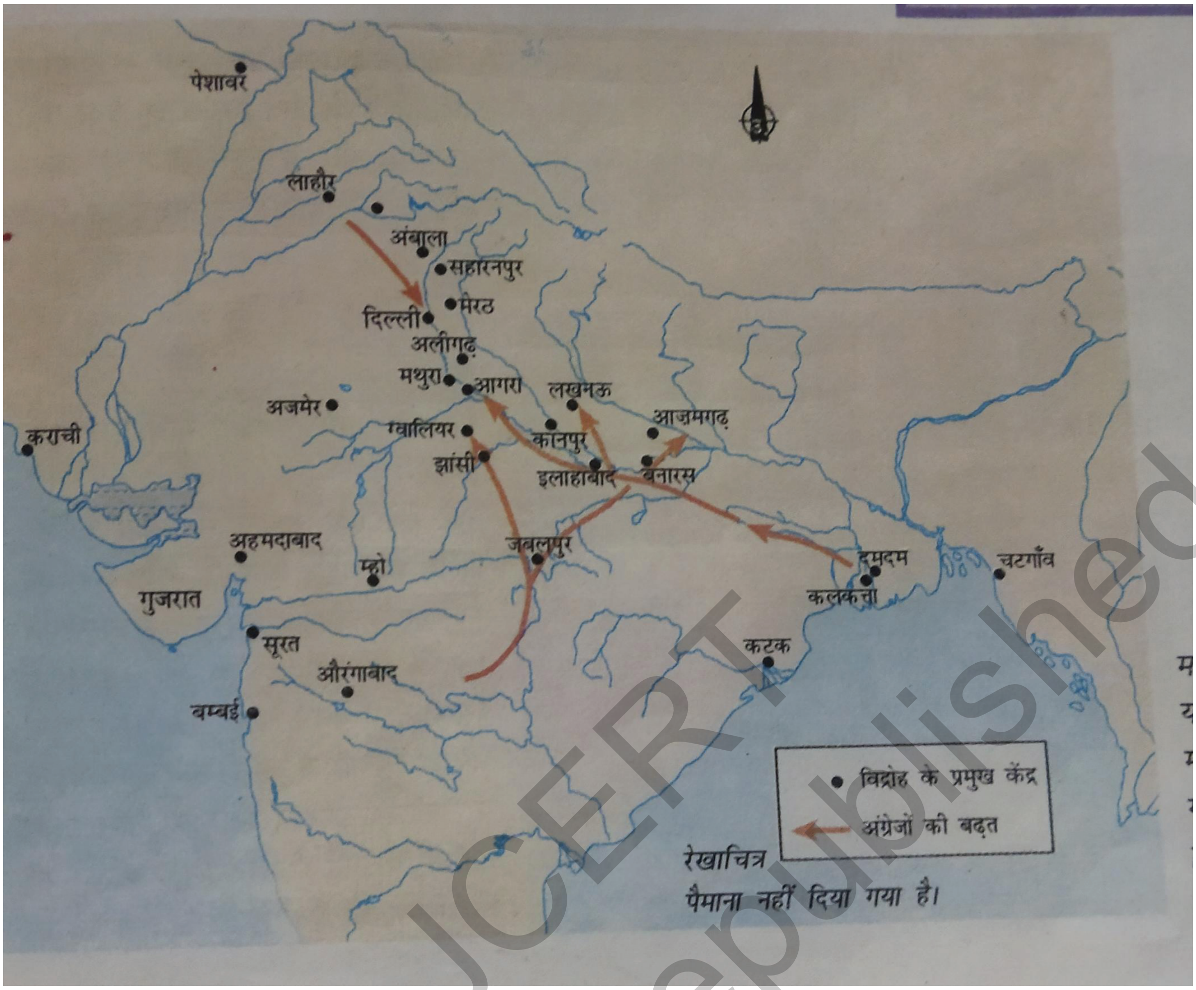

विद्रोह के प्रसार एवं केंद्र।

मेरठ

दिल्ली

कानपुर

अवध - लखनऊ

झांसी - ग्वालियर

बिहार

क्रांति की तिथि 31 मई 1857 (अट्ठारह सौ सत्तावन) ईस वीं को निश्चित की गई लेकिन यह समय पूर्व आरंभ हो गई

© JCERT not to be republished

मई को मेरठ छावनी में चर्बी वाले कारतूस लेने से इनकार करने वाले पचासी सैनिकों को हथकड़ी पहना कर जेल भेज दिया गया, साथी सैनिक उस समय खून की घूंट पीकर रह गए, लेकिन 10 मई को जेल में प्रवेश कर अपने साथियों को मुक्त कराया: इस प्रकार 11 वीं एवं 20 वीं देशी पलटन ने बगावत का ऐलान कर दिया 11 वीं पलटन के कर्नल फिनिश को गोली से उड़ा दिया इस तरह विद्रोह की शुरुआत हो गई

अब यह सैनिक दिल्ली की ओर कूच कर गए।

मई की सुबह क्रांतिकारी दिल्ली पहुंच गए, दिल्ली की 54 वीं इन्फेंट्री इनके साथ हो गई, ये लाल किला में प्रवेश किया और बहादुर शाह जफर को अपना नेता घोषित कर दिया। बहादुर शाह के नेतृत्व की खबर पूरे भारत में आग की तरह फैल गई भारतीयों में नए उत्साह एवं जोश का संचार हुआ, अब इस क्रांति का प्रसार देश के विभिन्न भागों में होने लगी।

विद्रोह का नेतृत्व पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने किया था।

अंग्रेजों ने नाना साहब के पेंशन को बंद कर दिया था। नाना साहब के प्रति अंग्रेजों के व्यवहार से वहां की जनता में काफी आक्रोश था।

कानपुर में टीका सिंह ने विद्रोह को संगठित किया 53 वीं एवं छप्पन वीं बटालियन ने विद्रोह कर दिया।

जुलाई को बिठूर में नाना साहब का राजतिलक किया गया, उन्होंने कानपुर के आसपास का राज संभाल लिया।

लंबे संघर्ष के बाद जनरल हैवलॉक, नील, कैंपवेल आदि ने क्रूरता पूर्वक कानपुर के विद्रोह का अंत कर दिया। नाना साहब नेपाल पलायन कर गए वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

यहां विद्रोह का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने संभाली।

बंगाल की सेना में अधिकांश सैनिक अवध प्रांत से आते थे, यह सभी सैनिक ग्रामीण अंचलों से आते थे।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के प्रति शोषणकारी नीति से कहीं न कहीं यह सैनिक भी प्रभावित थे।

© JCERT not to be republished

30 मई को रात्रि 9:00 बजे 71 वीं बटालियन ने लखनऊ में विद्रोह कर दिया अगले दिन 48 वीं बटालियन भी इनके साथ हो गई।

फैजाबाद के जेल से मौल वीं अहमद शाह को मुक्त करा लिया गया।

हैवलॉक, कैंपबेल, आउट्रम आदि ने गोरखा रेजीमेंट की मदद से 31 मार्च 1858 को लखनऊ पर पुनः कब्जा कर लिया

प्रारंभ में यहां का नेतृत्व वख्त खाँ के हाथों में थी लेकिन झोकन बाग हत्याकांड के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने दामोदर राव के नाम पर झांसी राज्य का नेतृत्व संभाल लिया वक्त।

रानी ने वींरता पूर्वक अंग्रेजों को परास्त किया लेकिन 3 अप्रैल 1858 ईसवी ह्यूरोज ने झांसी पर कब्जा कर लिया।

रानी कालपी पहुंचे यहां तात्या टोपे का सहयोग इन्हें प्राप्त हुआ, लेकिन ह्यूरोज यहां भी उन्हें परास्त किया।

जून 1858 ईस वीं में रानी एवं तात्या टोपे ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया लेकिन ह्यूरोज ने इन्हें यहां भी परास्त किया और मौत के घाट उतार दिया अंग्रेज ग्वालियर, पर कब्जा करने में सफल रहे।

बिहार में क्रांति का नेतृत्व जगदीशपुर के बाबू वींर कुंवर सिंह के हाथों में था।

14 अगस्त अट्ठारह सौ सत्तावन को ब्रिटिश सेना जगदीशपुर पर अधिकार कर लिया।

अब कुंवर सिंह आजमगढ़ पर कब्जा कर लिया बाद में आजमगढ़ अपने साथियों को सौंपकर बनारस के लिए रवाना हो गए।

22 अप्रैल 1858 को कुंवर सिंह ने जगदीशपुर को पुनः प्राप्त कर लिया 23 अप्रैल को कुंवर सिंह लीग्रांड की सेना को पराजित किया और ग्रांड मारा गया।

26 अप्रैल 1858 को कुंवर सिंह की मृत्यु के पश्चात उनके छोटे भाई अमर सिंह ने क्रांति का नेतृत्व किया।

© JCERT not to be republished

विद्रोह का केंद्र	नेतृत्वकर्ता	दमनकर्ता अंग्रेज सेनापति
दिल्ली	बहादुर शाह जफर द्वितीय	निकोलसन, कैप्टन हडसन
कानपुर	नाना साहेब, तात्या टोपे, अजीमुल्ला खाँ	कैंपबेल, हैवलॉक
लखनऊ	बेगम हजरत महल, नवाब वाजिद अलीशाह	कॉलिन कैंपवेल
झांसी /ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
जगदीशपुर	कुंवर सिंह, अमर सिंह	विलियम टेलर, विंसेंट ऑयर
बैरकपुर	मंगल पांडे	कर्नल सील
बरेली	खान बहादुर खान	विंसेंट ऑयर
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लियाकत अली	कर्नल ऑनसेल, नील

© NCERT not to be republished

क्रांति के असफलता के कारण

प्रभा वीं नेतृत्व नहीं।

सीमित संसाधन।

मध्य वर्ग की भागीदारी नहीं।

देशी राजाओं का असहयोग।

गोरखा और सिखों के द्वारा अंग्रेजों को मदद।

भारतीयों की तुलना में अंग्रेजों के पास योग्य सेनापति।

अनेक वर्गों की उदासीनता।

विद्रोहियों में एक प्रभा वीं नेता का अभाव था। हालांकि नानासाहेब, तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई आदि बहादुर नेता थे, लेकिन वे समग्र रूप से आंदोलन को प्रभा वीं नेतृत्व प्रदान नहीं कर सके।

सत्ताधारी होने के कारण संचार के साधन रेल, डाक, तार एवं परिवहन सभी अंग्रेज के अधीन थे, विद्रोहियों के पास हथियार संचार एवं धन की कमी थी।

अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यमवर्ग बंगाल के अमीर व्यापारियों और जमींदारों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की मदद की।

राजस्थान, मैसूर, महाराष्ट्र, पूर्वी बंगाल, हैदराबाद, गुजरात आदि में शासकों ने विद्रोह को फैलने नहीं दिया। ग्वालियर, पटियाला हैदराबाद, जिंद एवं नेपाल आदि ने तो विद्रोह के दमन में अंग्रेजों का साथ दिया।

गोरखा और सिख सैनिकों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों का भरपूर सहयोग दिया।

अंग्रेजों के पास निकोलसन, आउट्राम, लारेंस,एडवर्ड जैसे योग्य सेनापति थे जो आधुनिक हथियारों के प्रयोग में सिद्धहस्त थे, जबकि भारतीय सेना पति के वींरता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता है, लेकिन आधुनिक हथियारों एवं इस शैली में सिद्धहस्त नहीं थे।

शिक्षित और मध्यम वर्ग अपने आप को इस विद्रोह से अलग रखा, क्योंकि ये लोग आधुनिकीकरण हेतु अंग्रेजी शासन को बेहतर समझते थे।

© JCERT not to be republished

क्रांति का परिणाम

ब्रिटिश राज्य का प्रत्यक्ष शासन।

ब्रिटिश सत्ता ने भारत में शासन की जिम्मेदारी सीधे अपने हाथों में ले ली।

धार्मिक सहिष्णुता।

अंग्रेजों ने यह वादा किया कि वे भारत के धर्म, रीति-रिवाज और परंपराओं में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा उसका सम्मान करेगा।

प्रशासनिक परिवर्तन।

भारत में गवर्नर जनरल के पद को वायसराय में परिवर्तित कर दिया गया।

भारतीय शासकों के अधिकारों को मान्यता दी गई।

व्यपगत के सिद्धांत को त्याग दिया गया।

दत्तक पुत्र ग्रहण का अधिकार प्रदान कर दिया गया।

सैन्यपुनर्गठन।

सेना में भारतीय सिपाहियों के अनुपात को कम किया गया और यूरोपीय सिपाहियों के अनुपात को बढ़ा दिया गया।

शस्त्रागार ब्रिटिश सिपाहियों के अधीन रखने का निर्णय लिया गया।

फूट डालो और राज करो की नीति आरंभ।

अट्ठारह सौ सत्तावन (1857 ई०) की क्रांति में हिंदू-मुस्लिम एकता को देखकर अंग्रेजो को लगा कि इनकी एकता को समाप्त किए बिना भारत में राज करना संभव नहीं है, इसलिए तुष्टीकरण की नीति को आरंभ करते हुए फूट डालो राज करो के सिद्धांत को अपनाया जिसका परिणाम 1947 में भारत और पाकिस्तान दो देश विश्व मानचित्र पर उभरे।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य।

इस विद्रोह की शुरुआत 10 मई अट्ठारह सौ सत्तावन (1857 ई०) को मेरठ की छावनी से प्रारंभ हुई।

रोटी एवं कमल का फूल इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह था।

मंगल पांडे ने अंग्रेज सार्जेंट की हत्या कर दी उन्हें 8 अप्रैल1857 को मंगल पांडे को फांसी दी गई।

विद्रोह के नेता मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को देश निकाला देकर रंगून भेज दिया गया जहां 1862 ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

विद्रोह का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग था।

अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति के समय ब्रिटेन का प्रधानमंत्री पामर्स्टनथा।

तात्या टोपे को सिंधिया के एक सामंत मानसिंह ने पकड़ लिया और अंग्रेजों को सौंप दिया, जहां शिवपुरी में 18 अप्रैल अट्ठारह सौ उनसठ को उसे फांसी दी गई।

विद्रोह के दमन में अंग्रेजों को पटियाला, ग्वालियर, हैदराबाद, जिंद एवं नेपाल के शासकों ने सहायता दी।

कैनिंग ने कहा था कि साथ राजाओं ने तूफान के सामने तरंग रोध का काम किया अन्यथा उसने हमें एक झोके में बहा दिया होता।

अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति के समय भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग था।

इस क्रांति से उत्तर एवं मध्य भारत मुख्य रूप से प्रभावित हुए।

कानपुर में विद्रोह के नेता नाना साहब का मूल नाम धोंडू पंत था।

तात्या टोपे का मूल नाम रामचंद्र पांडुरंग था।

विद्रोह के बारे में जॉन लॉरेंस ने कहा था कि विद्रोहियों में कोई एक योग्य नेता होता तो अंग्रेज हार जाते।

1857 के विद्रोह के बाद भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर दिया गया और ब्रिटिश सत्ता ने यहां की बागडोर अपने हाथों में ले ली।

© JCERT not to be republished

प्रश्नावली

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. द ग्रेट रिवॉल्ट नामक पुस्तक किसने लिखी है ?
   a. पट्टाभीसितारमैया b. अशोक मेहता
   c. जेम्स आउट्राम d. रॉबर्ट
2. अट्ठारह सौ सत्तावन ईस वीं में अवध में क्रांति का नेतृत्व किसने किया?
   a. लक्ष्मी बाई b. वींर कुंवर सिंह
   c. बेगम हजरत महल d. जीनत महल
3. अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति आरंभ हुई?
   a. 10 मई b. 13 मई
   c. 18 मई d. 26 मई
4. व्यपगत के सिद्धांत का संबंध किससे है?
   a. लॉर्ड कर्जन b. डलहौजी
   c. लिटन d. मिंटो
5. 1857 ई० के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था?
   a. लॉर्ड क्लाइव b. लॉर्ड बेंटिक
   c. लॉर्ड कैनिंग d. लॉर्ड डलहौजी

© JCERT not to be republished

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 1857 ई० की क्रांति में मुख्य भूमिका निभाने वाले 4 महापुरुषों का नाम लिखें।
2. 1857 ई० की क्रांति के कारणों पर संक्षिप्त प्रकाश डालें।
3. 1857 ई० की क्रांति के लिए डलहौजी कहां तक उत्तरदाई था?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 1857 की क्रांति की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।
2. 1857 की क्रांति के परिणाम एवं महत्व का वर्णन कीजिए।